अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

अंक : 4

अगस्त 2023

जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य

वर्ष: 68 अंक: 11

अगस्त 2023

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

व्रतों के बिना दुनिया चल नहीं सकती। व्रतों को त्यागने से सर्वनाश हो जाता है। मैं व्यक्ति-सुधार में विश्वास नहीं रखता। सामूहिक सुधार को सत्य मानकर चलता हूँ। व्यक्ति-सुधार की प्रक्रिया में उतना वेग और उत्साह नहीं रहता, जितना सामूहिक सुधार में रहता है। इसके तात्कालिक परिणाम भी लोगों को आकृष्ट कर लेते हैं। अणुव्रत आंदोलन इस दिशा में मार्ग-सूचक बने, ऐसी मेरी भावना है।

- आचार्य जे. बी. कृपलानी

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2.
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

स्वतंत्रता और हमारी भूमिका

15 अगस्त को हम एक उत्सव की तरह स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। एक देश की स्वतंत्रता अतिविशिष्ट घटना है। कितने सेनानियों ने, कितनी रातें जाग कर बितायीं, कितनी जिंदगियाँ कुर्बान हो गयीं, गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर कितने मासूमों ने अत्याचार की वेदनाएँ सहीं... इसकी स्मृति का स्मारक होता है – एक देश का स्वतंत्रता दिवस।

लेकिन क्या यथार्थ में हम जोड़ पाते हैं स्वयं को उस अतीत से, जो हमारे वर्तमान की बुनियाद बना! क्या हम अपनी कथनी और करनी से सच्ची श्रद्धांजलि दे पा रहे हैं उन शहीदों को, जिन्होंने अपनी जान इसलिए न्यौछावर कर दी थी कि आने वाली पीढ़ियाँ आजाद हवा में सांस ले सकें! प्रतिदिन नहीं, यदि प्रत्येक 15 अगस्त भी हमें इन प्रश्नों से दो-चार कर सके तो निश्चय ही इस दिवस की सार्थकता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगेगा।

किसी देश के चरित्र का निर्धारण उस देश की जनता के चरित्र से होता है। आज सबसे अधिक जरूरी है कि हमारा, देश की जनता का, चरित्र उन्नत हो। इस दिशा में सार्थक प्रयास की अपेक्षा राजनेताओं और सत्ताधीशों से करना बेमानी है, जिनका स्वयं का चरित्र दागदार है। ऐसे में संत-महात्माओं और सद्जनों को अपने प्रयासों को नयी गति देने की आवश्यकता है जो अपने चरित्र की ताकत से जन-जन को सही दिशा दिखा सकें।

देश की आजादी को मजबूत करने में मैं क्या योगदान दे सकता हूँ, यह प्रश्न हम सब के मन में उठे, पूरी ताकत के साथ उठे, यह कामना करता हूँ।

– संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

■ प्रेरणा पाथेय ■

जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य

■ आचार्य महाप्रज्ञ

अपने भीतर कौन कैसा है, यह पता चलना तो बहुत कठिन बात है, किन्तु व्यवहार जैसा सामने आता है, उसके आधार पर व्यक्ति को पहचाना जाता है। हम बाहर में कैसे प्रकट होते हैं? हम दूसरे के प्रति, पदार्थ के प्रति, वस्तु के प्रति, व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं? उस व्यवहार में हमारा पूरा व्यक्तित्व झलक जाता है।

ध्यान का परिणाम है जागरूकता। छोटी-से-छोटी घटना के प्रति, छोटी-से-छोटी वस्तु के प्रति और छोटे-से-छोटे व्यक्ति के प्रति जागरूकता आ जाती है, तो समझना चाहिए कि ध्यान ने बहुत अच्छा काम किया है।

ध्यान से अन्तरंग बदलना चाहिए और व्यवहार भी बदलना चाहिए। एक आदमी बाहर से बदल गया, बाहर बदलाव दिखाता है, किन्तु हो सकता है कि भीतर प्रवंचना हो। वहीं, जो भीतर में भी बदल जाएगा, उसके लिए यह निश्चित है कि वह बाहर में भी बदलेगा। जब आदमी भीतर से बदलता है तब दो शुद्धियां घटित होती हैं - भाव शुद्धि और विचार शुद्धि। ये दोनों स्व तक सीमित हैं।

चर्या शुद्धि

ध्यान का तीसरा परिणाम है - चर्या शुद्धि। इसका पहला तत्त्व है जागरण, जागने के बाद शारीरिक क्रिया करना। जहाँ शारीरिक क्रिया का प्रश्न है, वहाँ स्वच्छता की बात आएगी। साधक ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेगा, जिससे गन्दगी बढ़े, अस्वच्छता बढ़े, प्रदूषण बढ़े। यदि स्वच्छता

एक जागरूक व्यक्ति के खान-पान में सहज सभ्यता आ जाती है। वह संयम का मूल्य जानता है। इन्द्रियों की लोलुपता और आकर्षण उसके आड़े नहीं आएंगे।

की बात समझ में नहीं आती है तो धर्म की बात कैसे समझ में आएगी? वह आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक, परलोक, पुनर्जन्म जैसे सूक्ष्म और गूढ़ तत्त्वों को कैसे समझ पाएगा?

व्यवहार की एक कसौटी है - आहार शुद्धि। एक जागरूक व्यक्ति के खान-पान में सहज सभ्यता आ जाती है। वह संयम का मूल्य जानता है। इन्द्रियों की लोलुपता और आकर्षण उसके आड़े नहीं आएंगे। ध्यान करने वाला व्यक्ति पहले नम्बर का सभ्य होगा, शिष्ट और व्यवहारकुशल होगा। यदि ऐसा नहीं होता है, तो मान लेना चाहिए कि ध्यान हुआ नहीं है।

आर्थिक शुद्धि

ध्यान का चौथा परिणाम है आर्थिक शुद्धि। एक व्यक्ति ध्यान करता है और अर्थ की शुद्धि के प्रति जागरूक नहीं है तो मानना चाहिए कि ध्यान का व्यवहार में अवतरण नहीं हुआ। आर्थिक शुद्धि की पहली मर्यादा है - व्यक्ति किसी के प्रति क्रूर व्यवहार न करे। एक साधक अर्जन की शुद्धि के प्रति जागरूक होगा। उसके अर्जन में क्रूरता और कठोरता नहीं होगी। जो किसी के प्रति क्रूर व्यवहार नहीं कर सकता, वह खाद्य वस्तु में मिलावट की बात कैसे सोच सकता है? वह धोखाधड़ी कैसे कर सकता है? वह किसी के प्रति अन्याय

कैसे कर सकता है? आर्थिक शुद्धि होने पर व्यक्ति किसी का शोषण नहीं कर सकता। जो ध्यानी होता है, उसमें सहयोग और सहानुभूति की भावना जागती है। वह केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं जीता, बल्कि जो असमर्थ हैं, पिछड़े हुए हैं, उनके प्रति सहयोग और सहानुभूति की भावना जाग जाती है। दूसरे का कष्ट देखना उसके लिए सह्य नहीं होता।

एक ध्यानी व्यक्ति अपनी सुविधा के लिए अधिक संग्रह नहीं कर सकता। आजकल सुनते हैं कि लोग बुरे साधनों से धन कमाते हैं, फिर अपनी सुख-सुविधा, बड़प्पन और साज-सज्जा के लिए लाखों-करोड़ों रुपये तक खर्च कर देते हैं। यह प्रदर्शन की जो मनोवृत्ति है, बिल्कुल अर्थहीन है। इससे सामाजिक विकास में एक अवरोध पैदा हो गया है।

जो ध्यानी होता है, उसमें सहयोग और सहानुभूति की भावना जागती है। वह केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं जीता।

सम्बन्ध शुद्धि

ध्यान का पाँचवां परिणाम है - सम्बन्धों की शुद्धि। समाज में जितने सम्बन्ध हैं, वे बिल्कुल स्वस्थ बनें, यह अपेक्षित है। समाज का मतलब क्या है? सम्बन्धों का नाम ही समाज है। पिता-पुत्र, भाई-भाई, मालिक-कर्मचारी - ये जो सम्बन्ध हैं, इन सम्बन्धों की व्याख्या ही तो समाज है। वैसे हर आदमी अलग-अलग है, किन्तु सब परस्पर सम्बन्धों से जुड़ गये और एक समाज बन गया। सम्बन्धों की शुद्धि ध्यान का सहज प्रतिफल है। आज सम्बन्धों की बड़ी समस्या है। सम्बन्ध शुद्ध नहीं रहे। इसका कारण है - स्वार्थ और भेदनीति। ये सम्बन्धों को बिगाड़ देते हैं। भाई-भाई में परस्पर इतना वैमनस्य होता है कि दुश्मनों के बीच भी उतना नहीं होता। थोड़ी-सी बात होती है और टकराव हो जाता है, सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं।

ध्यान करने वाले व्यक्ति में स्वार्थ की भावना प्रबल नहीं बन पाएगी। उसमें स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ – तीनों संतुलित हो जाते हैं। उसमें यह विवेक होता है कि इतना स्वार्थ साधना है, इतना परार्थ साधना है – दूसरे के लिए कुछ करना है और इतना परमार्थ करना है।

स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ तीनों का संतुलन रहेगा तो सामाजिक सम्बन्ध कभी बिगड़ नहीं पाएंगे। ध्यान करने वाला व्यक्ति सम्बन्ध को स्वार्थ की दृष्टि से अस्वस्थ नहीं बनाएगा, प्रत्येक सम्बन्ध को शालीनता से देखेगा, परार्थ और परमार्थ की चेतना के आधार पर भी देखेगा।

ध्यान करने वाला व्यक्ति सम्बन्ध को स्वार्थ की दृष्टि से अस्वस्थ नहीं बनाएगा, प्रत्येक सम्बन्ध को शालीनता से देखेगा, परार्थ और परमार्थ की चेतना के आधार पर भी देखेगा।

आप स्वयं अपने आपको देखें कि भीतर में कितना परिवर्तन आया है और व्यवहार में कितना परिवर्तन आया है। भीतर में अमृत है तो बाहर में भी अमृत आना चाहिए। हम ध्यान को भी धोखा न बनाएं, विडंबना न बनाएं। जैसा आजकल हो रहा है कि बस ध्यान करो फिर कोई चिन्ता नहीं है, चाहे नशा करो, शराब पियो, मुक्त यौनाचार करो, जश्न मनाओ, गलत साधनों का प्रयोग करो, तुम्हारा सब कुछ ठीक हो जाएगा। यह कैसी विडंबना है?

हम ध्यान को बिल्कुल पवित्र रखें। बहुत पवित्रता के साथ यह अनुभव करें कि ध्यान की क्या मर्यादा है? ध्यान का क्या प्रतिफल है? इस दृष्टि से भीतर और बाहर – दोनों के प्रति जागरुकता बढ़े। इस उभयमुखी जागरुकता में ही जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य छिपा है।

तुलसी उवाच

मानवीय मूल्यों का सौरभ

अणुव्रत मनुष्यता का व्रत है। मनुष्यता सहज मानवीय गुणों का अभ्युदय है। जहां मनुष्य के व्यवहारों में अपने और पराये की भेदरेखा उभर आती है, वहाँ सहजता का लोप हो जाता है। जिस कार्य के लिए मनुष्य को यह सोचना पड़े कि मैं अमुक काम सबके सामने करूं या नहीं, वहाँ असहजता हो जाती है। असहज प्रवृत्तियों में क्रियाकाण्ड को बल मिल सकता है, पर चरित्र का पोषण नहीं होता।

चरित्र को पुष्ट करने के लिए करणीय और अकरणीय का विवेक अपेक्षित है। जो मनुष्य अकरणीय कार्य से निवृत्त होकर स्वयं को करणीय से जोड़ लेता है, अग्राह्य को छोड़कर ग्राह्य को ग्रहण करता है तथा अवाच्य से अपना बचाव कर वाच्य में अपनी वाणी का नियोजन करता है अर्थात् जिस व्यक्ति में मनुष्यता होती है, वह जहाँ जाता है, मानवीय मूल्यों के सौरभ से वहाँ का वातावरण सुरभित बना देता है।

'नशामुक्ति से जीवन बदलें' आचार्य महाश्रमण के इस प्रभावी प्रवचन को देखने-सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

बदले युग की धारा

रचयिता : आचार्य श्री तुलसी

बदले युग की धारा।
नयी दृष्टि हो, नयी सृष्टि हो, अणुव्रतों के द्वारा।

मानवीय मूल्यों की रक्षा, अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता प्रामाणिकता उसका अमल हृदय है,
हिंसा के इस गहन तिमिर में अणुव्रत एक उजारा।

धार्मिक है, पर नहीं कि नैतिक, बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का यह कैसा अभिनय है,
इस उलझन का धर्म क्रांति ही है कमनीय किनारा।

मूल्यपरक शिक्षा के युग में संयम का अंकन हो,
सत्य अहिंसा से आप्लावित जन-जन का जीवन हो,
भोगवाद के चक्रवात से सहज मिले छुटकारा।

व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का उपचार अणुव्रत देगा,
प्रकटे अब परमार्थ चेतना, उपकृत हो जग सारा।

करें प्रबल पुरुषार्थ, सभी में अभिनव आस्था जागे,
जोड़ें सबके अंतर-मानस को करुणा के धागे,
'तुलसी' मैत्री मंत्र अचल हो नभ में ज्यों ध्रुवतारा।।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित गीत 'बदले युग की धारा' स्वयं उन्हीं के प्रेरक स्वर में सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

राष्ट्र बोध ही एकमात्र लक्ष्य हो

गिरीश पंकज, रायपुर

राष्ट्रबोध, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीयता, देशभक्ति, राष्ट्रीय अस्मिता, ये ऐसे महान शब्द हैं जिनको आत्मसात करके कोई भी राष्ट्र शिखर पर खड़ा रह सकता है। महान कवि गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही की पंक्तियाँ हैं –

जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह जीव नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

गुलामी से मुक्ति की लम्बी लड़ाई हमने इन्हीं शब्दों को आत्मसात करके लड़ी थी और स्वतंत्रता के सूर्य का वरण किया। पर आज हमारी हालत किसी से छिपी नहीं है। अब धीरे-धीरे राष्ट्रबोध कम हुआ है, या लगभग खत्म-सा हो गया है। यह गम्भीर चिंता की बात है।

जब देश से प्यार न होगा, अनुराग न होगा, स्नेह न होगा, तब हम राष्ट्रविरोधी बातें करके अपने को प्रगतिशील साबित करने की कोशिश करेंगे। जब तक हम अपने देश को अपना नहीं समझेंगे, इस मिट्टी से अपना गहरा नाता नहीं मानेंगे, तब तक देशप्रेम विकसित नहीं होगा। राष्ट्र के प्रति हमारा बोध तभी विकसित होगा, जब हम इस धरती को अपनी माँ समझेंगे। राष्ट्र से हमारा रिश्ता भौतिक न होकर भावनात्मक होना चाहिए।

क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान कौन भूल सकता है? उनके मन में अपनी मातृभूमि के लिए अद्‌भुत प्रेम था। उनकी अमर रचना है –

ऐ मातृभूमि तेरी जय हो, सदा विजय हो
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कांतिमय हो
अज्ञान की निशा में, दुःख से भरी दिशा में
संसार के हृदय में तेरी प्रभा उदय हो
तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विषय हो।
वह भक्ति दे कि 'बिस्मिल' सुख में तुझे न भूले
वह शक्ति दे कि दुःख में कायर न यह हृदय हो।

मगर मातृभूमि की जय का घोष लगाने वाली पीढ़ी अब नजर नहीं आती। अगर यही रफ्तार रही तो वह दिन दूर नहीं जब देश संकट में पड़ सकता है। घर को आग घर के चिरागों से ही लगती रही है। अब ऐसे नालायक चिराग बढ़ रहे हैं, इनको फौरन बुझाना पड़ेगा और ऐसे चिरागों को प्रोत्साहित करना होगा जो राष्ट्र में व्याप्त हर तरह के तिमिरों को पीकर प्रकाश की गंगा प्रवाहित कर सकें।

दरअसल राष्ट्र को लेकर हमारे देश में वह चेतना मुखरित ही न हो सकी, जो होनी चाहिए। आजादी के ठीक बाद हमारी पाठ्य-पुस्तकों में देशभक्ति के पाठ शामिल रहते थे। देश के लिए मर-मिटने वालों की सत्य कथाएं हुआ करती थीं। हमारे समग्र अध्ययन का केंद्र ही राष्ट्रभक्ति थी, पर जैसे-जैसे हम 'ग्लोबल' बनते या बनाये जाते गये, वैसे-वैसे देश और देशभक्ति के पाठ लुप्त होते चले गये।

ऐसे में बच्चों के मन में राष्ट्रबोध जगे तो जगे कैसे? जब बच्चा बचपन से ही राष्ट्र के बारे में सोचेगा, समझेगा, तभी तो उसके अंतस में राष्ट्र के प्रति अनुराग कायम रहेगा।

अपनी अस्मिता को तिलांजलि देकर हमने अपनी पीढ़ी को जड़ से काट दिया। तभी तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को लिखना पड़ा –

हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।

गुलामी के दौर में लोग देशभक्त हुआ करते थे, देश के लिए मर-मिटने पर आमादा रहते थे। अगर देशभक्तों ने बलिदान न किया होता तो क्या भारत स्वतंत्र हो सकता था? राष्ट्रबोध का भाव ही था जिसने चेतना जगायी। उस वक्त की युवा पीढ़ी ने अपने भविष्य को दाँव पर लगाकर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया था। अनेक शहीद भी हुए, पर आज कहाँ गया वह राष्ट्रबोध?

उस वक्त की युवा पीढ़ी ने अपने भविष्य को दाँव पर लगाकर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया था। अनेक शहीद भी हुए, पर आज कहाँ गया वह राष्ट्रबोध?

माना कि समूची दुनिया हमारा घर है। हम कहीं भी जाकर काम कर सकते हैं, पर हम अपने देश को तो न भूलें। विदेश में रहकर हम देश के लिए क्या कर सकते हैं, इस पर निरंतर विचार करना चाहिए। भारत में चल रही किसी भी अच्छी सामाजिक गतिविधि में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। अपना राष्ट्र अपनी आत्मा का हिस्सा बना रहे। ऐसे संस्कार तभी आएंगे जब हम बच्चों के हृदय में बचपन से ही राष्ट्रबोध जगाएं कि यह देश मेरा है। इसी के लिए जीना-मरना है। इसी की उन्नति के लिए मेरा जीवन है। राष्ट्र की मैं संतान हूँ और इसके लिए मेरा कर्त्तव्य है। स्कूल में ऐसी शिक्षा मिले, घर में भी वैसा परिवेश मिले। समाज में राष्ट्रवादी लोग वातावरण बनाएं, तब कहीं एक महान राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

सहिष्णुता : आज की महती आवश्यकता

डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट, उज्जैन

सहिष्णुता का अर्थ है दूसरों की राय और विश्वासों के प्रति सम्मान, जो स्वयं की राय और विश्वास से भिन्न हो सकते हैं। यह बिना किसी शत्रुता या पूर्वाग्रह के दूसरों की अलग-अलग पृष्ठभूमि की सराहना है। सहिष्णुता मौलिक स्वतंत्रता और लोगों द्वारा प्राप्त सार्वभौमिक मानवाधिकारों की नींव है। एक वृक्ष के लिए जड़ या एक मकान के लिए नींव की जितनी आवश्यकता होती है, उतना ही महत्व सहिष्णुता का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में है। समाज की नींव भी सहिष्णुता की जड़ों पर ही टिकी होती है और ऐसे ही आधारों पर टिकी होती है व्यक्तिगत और सामाजिक समरसता।

उच्च स्तर पर सहिष्णुता यानी आपसी सौहार्द रहेगा, तभी निचले स्तर पर भी सहिष्णुता बनी रहेगी। विचारों की कट्टरता और आपसी वैमनस्यता ने निचले स्तर तक सहिष्णुता को खंडित किया है, इसके आधार को छिन्न-भिन्न किया है। जब नींव ही दगा दे जाये तो फिर ऊँचे महलों के ख्वाब अधूरे ही रहते हैं। दूसरों से सहिष्णुता का आह्वान करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि क्या स्वयं के पास वही सहिष्णुता है।

एक-दूसरे के प्रति 'हेट लेंग्वेज' का उपयोग, किसी भी बात पर तैश में आ जाना और स्वार्थवश एक विचारधारा को छोड़कर दूसरी विचारधारा में बगैर शर्म के प्रवेश कर जाना और लोगों की भावनाओं के साथ खेलना ही तो

आजकल की राजनीति सिखा रही है। फिर सहिष्णुता के मायने समझना और दूसरों को समझाना बेमानी-सा ही लगता है।

किसी भी राजनीतिक दल में आज सहिष्णुता नहीं बची है तो फिर दूसरों को असहिष्णु कहने का अधिकार भी नहीं है, जबकि सबसे ज्यादा इस शब्द का इस्तेमाल राजनीतिक दल ही करते हैं। लोकतंत्र में विरोध भी इसलिए होता है क्योंकि एक तो विरोध करना ही धर्म हो गया है। दूसरा, सामने वाला जो भी कहे, उसका विरोध ही लोकतंत्र हो गया है। ऐसे में सहिष्णुता सिर्फ कागजी होती है और ऐसा लोकतंत्र दिशा नहीं दिखाएगा, दिशाहीन ही होगा। इस दिशाहीनता का परिणाम आम जनता को ही भोगना होता है। विविधताओं के चलते अलग-अलग प्रकार की सहिष्णुता ही समाज और देश को बचा सकती है।

चुप रहकर या तटस्थ रहकर हम समस्याओं से भाग नहीं सकते। हमें आगे बढ़कर अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी, तभी सहिष्णुता सार्थक होकर हमारे जीवन का हिस्सा बन पाएगी।

सहिष्णुता को अक्सर तटस्थता और संवादहीनता में बाँधा जाता है लेकिन यह भी एक विकृति है कि एक बहुत बड़ा वर्ग सामान्यतः इन्हीं दो भावों में संलिप्त रहता है। इससे भी सहिष्णुता को स्थान नहीं मिल पा रहा है। चुप रहकर या तटस्थ रहकर हम समस्याओं से भाग नहीं सकते।

हमें आगे बढ़कर अपनी हिस्सेदारी निभानी होगी, तभी सहिष्णुता सार्थक होकर हमारे जीवन का हिस्सा बन पाएगी। सहिष्णुता के सहारे ही हम जीवन में श्रेष्ठ और न्यायोचित विकास की ओर बढ़ सकते हैं।

सवाल का जवाब

गोविन्द भारद्वाज, अजमेर

स्टेशन से बाहर खड़े ऑटो रिक्शा, हाथ रिक्शा और ई-रिक्शा वाले चिल्ला रहे थे-''कहाँ चलना है बाबूजी।'' मैं भीड़ से बाहर निकला। अचानक मेरी नजर एक लड़की पर पड़ी। वह ई-रिक्शा लेकर चुपचाप खड़ी थी। मैंने पूछा,''शास्त्रीनगर चलोगी?''

''क्यों नहीं बाबूजी।'' उसने जवाब दिया।

मेरे बैठते ही उसने सरपट रिक्शा दौड़ाया। ''बुरा न मानो तो एक बात पूछूं?'' मैंने हिम्मत करके कहा।

''पूछो बाबूजी!'' वह बोली।

''तुम इस छोटी-सी उम्र में ई-रिक्शा क्यों चलाने लगी?''

''परिवार के लिए।''

''घर में और कोई नहीं है?''

''सब हैं, छोटे बहन-भाई और माँ।''

''और पिताजी...?''

''वे नहीं रहे, छः महीने पहले ही...।''

''तो तुम और कोई काम कर लेती...रिक्शा ही क्यों?'' मैंने उसकी बात काटते हुए पूछा।

''लीजिए बाबूजी... शास्त्रीनगर आ गया।'' उसने रिक्शा रोकते हुए कहा।

मैंने किराया देते हुए पूछा,''मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया तुमने?''

''बाबूजी, मेरे पिताजी यही ई-रिक्शा चलाते थे।''

''तो क्या हुआ..काम बदल भी तो सकती थी।'' मैंने फिर पूछा।

लम्बी साँस लेते हुए उसने उल्टे मुझसे पूछा, ''अगर मेरे पिताजी सरकारी नौकरी करते तो क्या होता..?''

''तुम्हें उनकी जगह नौकरी मिल जाती।''

यह सुनकर वह बड़े जोर से हँसी। फिर बोली, ''बाबूजी, सरकारी नौकरी भी तो पिताजी की जगह ही मिलती..। लेकिन वे रिक्शा चलाते थे, इसलिए मुझे रिक्शा मिल गया।'' इतना कहकर वह चली गयी।

मैं निरुत्तर-सा खड़ा रह गया। मैं भी अपने पिताजी की जगह सरकारी नौकरी में लगा था।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

स्नेह का बंधन

रंगनाथ द्विवेदी, जौनपुर

सुजाता आज जबसे सोकर उठी थी, बहुत खुश और व्यस्त थी। आज पूरे चार साल बाद वह अपने भैया देव की कलाई पर राखी बांधने वाली जो थी। उसके पति आकाश ने छेड़ते हुए कहा, ''आज तो मेरी डार्लिंग के पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं, इतनी बेकरारी तो तुम्हारे अंदर कभी मैंने अपने लिए भी नहीं देखी...देखता भी कैसे? कहाँ भाई, कहाँ मैं?''

यह सुनकर सुजाता का गला भर आया। वह बोली, ''नहीं जी, ऐसी कोई बात नहीं है। आप तो जानते ही हैं कि मेरा भाई एक फौजी है। वह देश के अनगिनत भाइयों और उनकी बहनों की सलामती के लिए अपने कंधे पर बंदूक टांगे सरहद पर जीरो डिग्री सेल्सियस से भी कम तापमान पर खड़ा रहता है, जबकि यहाँ खुद उसकी बहन की राखी अपने भैया के आने का इंतजार करती रहती है। आज मेरा वही फौजी भाई पूरे चार साल बाद राखी बंधवाने के लिए आ रहा है। पहले उसे छुट्टियां तब मिला

करती थीं जब भाई-बहन के प्यार का पर्व रक्षाबंधन बीत जाया करता था। यह सारी बेकरारी और उफनती हुई खुशी केवल मेरी उस राखी के चार साल के इंतजार का है जिसे मैं अपने भैया की कलाई पर बांध नहीं पायी।''

यह कहते-कहते सुजाता यादों में खो गयी- ''बचपन में ही मम्मी-पापा गुजर गये। जब तक थोड़ी-बहुत समझने लायक हुई, तब तक भैया और भाभी ने मुझे इतना प्यार दे दिया कि मैं बहन के साथ उनकी बेटी भी हो गयी। उन्होंने न सिर्फ मुझे पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, बल्कि मेरी शादी भी किसी पिता और माँ की तरह की। आप नहीं जानते...आपको केवल यह पता है कि मेरी भाभी कभी माँ नहीं बन सकती, मगर हकीकत में ऐसा कुछ भी नहीं है। उन दोनों ने केवल यह सोचकर किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया कि कहीं अपने बच्चे की वजह से उनके मन में मेरे पालने-पोसने को लेकर कोई खोट न आ जाये। ऐसे भाई को मैं एक जन्म तो क्या, हर जन्म में राखी बांधना चाहूँगी।''

सुजाता की अपने भैया के प्रति सम्मान और कृतज्ञता के भाव में पगी बातें सुनकर आकाश की आँखों में नमी उतर आयी और वह बोला, ''मुझे माफ कर दो सुजाता, मैं तो केवल मजाक कर रहा था। मेरी मंशा तुम्हारा दिल दुखाने की नहीं थी।'' अपने और आकाश के आँसू पोंछते हुए सुजाता मुस्कुराते हुए बोली,''मैं अपने पति को जानती भी नहीं कि वे कैसे हैं? अब बस करिए!'' इतना कहकर सुजाता ने अपनी भाभी श्रेया को फोन किया तो वह बोली- ''बस निकल ही रहे हैं।''

यह सुनकर सुजाता पति से बोली,''मैं नहाने जा रही हूँ क्योंकि भैया भी घर से निकल चुके हैं।'' स्नान करने के बाद सुजाता फटाफट तैयार हो गयी कि डोर बेल बज उठी। सुजाता ने पति से कहा,''जरा जाकर देखिए... शायद भैया आ गये। तब तक मैं राखी की थाली लेकर

आती हूँ।'' जितनी देर में उसके भैया और उसके पति बात करते हुए अंदर आये, सुजाता राखी वाली थाली लेकर कमरे में आ गयी। उसने भैया के सिर पर प्यार से तौलिया रखा और माथे पर अक्षत-रोली का मंगल टीका कर थाली में रखे हुए दीपक को जलाकर अपने बड़े भैया की लम्बी उम्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और उनकी कलाई में राखी बांध दी। इसके बाद सुजाता ने भैया को जैसे ही मिठाई खिलानी चाही, भैया ने सुजाता के हाथों से मिठाई लेकर दो टुकड़े कर दिये और एक टुकड़ा बहन के मुँह में प्यार से डाल दिया। भैया का यह प्यार देखकर सुजाता के आँसू छलक पड़े और उसने भैया के हाथ से मिठाई का दूसरा टुकड़ा लेकर उसे बड़े प्यार से भैया को खिला दिया।

भैया ने जेब में हाथ डालकर सोने की अंगूठी निकाली और सुजाता की अंगुली में पहनाते हुए कहा, ''जिस तरह तेरी यह राखी मेरी कलाई पर नहीं बल्कि मेरे दिल में बंधी रहती है, ठीक वैसे ही तुम इस अंगूठी को अपनी अंगुली में पहने हुए रहोगी तो हमेशा तुम्हें अपने भैया के अपने पास होने का एहसास होता रहेगा।''

''ओ भैया!'' इतना कहकर सुजाता अपने भैया के सीने से लिपट गयी।

क्या सीखा हमने?

■ सुकीर्ति भटनागर, पटियाला ■

मस्त पवन से क्या सीखा, क्या सीखा फूलों से?
दूर क्षितिज से क्या सीखा है? क्या सीखा कूलों से?

बादल से क्या सीखा हमने? क्या सीखा पानी से?
धरती से ना सीखा कुछ भी, ना संतों की वाणी से।।

रैन-दिवस नित ही समझाते, जन्म-मरण का भेद।
पर कब माना परिवर्तन को, रहा घिरा निर्वेद।।

सूरज, चाँद, सितारे सारे, ज्योति कलश छलकाते।
आते-जाते पल चुपके से, कितना कुछ कह जाते।।

पर क्या सीखा उनसे हमने? क्या गुण है अपनाया?
मन की घोर कलुषिता कारण, अंधकार ही पाया।।

क्या सीखा जीवों से हमने? उनको सदा सताया।
वनस्पति, पेड़ों को हमने, कष्ट सदा पहुँचाया।।

त्याग, अहिंसा, समता सारी, कैसे कहो भुला दी?
कुविचारों की खोल पिटारी, वसुधा पर फैला दी।।

पुष्प बेल में काँटे ढूँढ़े, मानस जलधि सुनामी।
धरती का अंतस ऊसर है, समयचक्र अधोगामी।।

दिशा-दिशा में इस सृष्टि के, छिपा तत्त्व जीवन का।
शुभ आशीष झरे कण-कण से, नेह सूत्र बंधन का।।

पर हमने तो अहंकारवश, निज पहचान भुला दी।
क्या हैं, क्या होना था हमको, यही बात बिसरा दी।।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

रजत जयंती वर्ष में प्रवेश

अणुविभा के महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन 'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका ने एक सुदीर्घ सफल यात्रा पूर्ण कर रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर लिया है। 15 अगस्त 1999 को जयपुर, राजस्थान से पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था।

अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने बताया कि सन् 2018 से इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन की जिम्मेदारी अणुविभा के कन्धों पर है। अणुव्रत आंदोलन के अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का आशीर्वाद पत्रिका की ताकत है, प्रतिमाह जिनके हाथों में पहुँच कर यह पत्रिका कृतार्थता का अनुभव करती है।

पत्रिका की 25वीं वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ देते हुए पत्रिका के संपादक संचय जैन ने बताया कि यह पत्रिका नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

नई पीढ़ी का सर्वांग संतुलित दिशा-दर्शन करने वाली पत्रिका **'बच्चों का देश'** नौनिहालों को स्वस्थ मनोरंजन के साथ जीवन निर्माण का मार्ग सुझाती है।

इस पत्रिका का नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

गौरवशाली अतीत के झरोखे से

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ ''मेरा जीवन : मेरा दर्शन।''

शराबबंदी हेतु आमरण अनशन

सर्वोदयी लोगों ने राजस्थान सरकार से अनुरोध किया कि वह राजस्थान में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा करे। सरकार ने इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। फलतः राजस्थान के प्रमुख सर्वोदयी कार्यकर्ता गोकुलभाई भट्ट ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी। राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति ने भी निर्णय लिया कि सरकार की शराबबंदी नीति की शिथिलता के विरोध में आन्दोलन चलाया जाये। समिति के अध्यक्ष मनोहर कोठारी इस विषय में काफी सक्रिय रहे। समिति के मंत्री मोहनलाल जैन ने लाडनूं आकर आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किये, योजना की जानकारी दी और बताया कि राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति ने शराबबंदी के पक्ष में हस्ताक्षर अभियान चालू किया है। उन्होंने शराबबंदी और अपने

मिशन के बारे में अच्छा प्रकाश डाला। आचार्यश्री ने कहा–''मोहनजी बड़े चरित्रवान और नैतिक व्यक्ति हैं और अनेक प्रकार की कठिनाइयों को झेलकर भी अणुव्रत के काम में लगे हुए हैं। यहाँ से कल जयपुर जा रहे हैं। वहाँ पहुँचकर शराबबंदी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की बात सोच रहे हैं।''

आचार्य तुलसी का अहिंसात्मक प्रतिरोध

आचार्य श्री तुलसी ने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति और सरकार की शिथिलता का स्वयं अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का निर्णय लिया और 26 मई 1972 को उपवास किया। अनेक साधु-साध्वियों ने भी उपवास किये। देशभर में हजारों-हजारों उपवास हुए। लाडनूं में शराब की दुकानें बंद रहीं। वहाँ से साठ सत्याग्रहियों को लेकर एक बस जयपुर गयी। प्रान्तीय अणुव्रत समिति द्वारा उठाया गया यह प्रथम क्रान्तिकारी कदम था।

27 मई को मध्याह्न में कैंप कार्यालय के प्रबंधक कमलेश चतुर्वेदी एक तार लेकर आये। तार गोकुलभाई भट्ट ने जयपुर से भेजा था। उसमें उन्होंने लिखा– ''आचार्यश्री के आशीर्वाद से कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के अनुरोध और आश्वासन पर आज अनशन समाप्त करूँगा। सहयोग के लिए अत्यंत आभारी

हूँ।'' अणुव्रत कार्यकर्ताओं की प्रसन्नता चरम पर थी कि आचार्य श्री तुलसी ने कल उपवास किया और कल ही काम सफल हो गया।

व्यसनों के त्याग का अभियान

आचार्य श्री तुलसी कालू में छह दिन रहे। वहां प्रवचन सुनने के लिए किसी कौम विशेष के लोग नहीं, सभी नागरिक आते थे। जुए और शराब का सामूहिक परित्याग हुआ। तम्बाकू, भांग, गांजा, जर्दा आदि नशीली वस्तुओं का प्रायः लोगों ने त्याग कर लिया। युवकों और युवतियों ने विशेष त्याग किये। लूणकरणसर क्षेत्र जुए के व्यसन से संत्रस्त था तो कालू क्षेत्र मद्यपान में अग्रणी था। अच्छे-अच्छे पदों पर कार्यरत व्यक्ति भी शराब के चंगुल में फंसे हुए थे। आचार्य श्री तुलसी को इस बात की जानकारी मिली। उन्होंने प्रवचन में तथा व्यक्तिशः मद्यपान के दुष्परिणामों की चर्चा की। भारतीय संस्कार निर्माण समिति के मंत्री मोहनलाल जैन भी सदलबल कालू पहुँच गये। उनकी ओर से काफी प्रयत्न किया गया। फलतः कालू के सभी वर्गों के मद्यपान करने वाले लोग आचार्यश्री के पास आये। उन्होंने मनोबल जुटाकर भविष्य में कभी शराब न पीने का संकल्प लिया।

संस्कार निर्माण शिविर

22 मई को सादुलपुर में संस्कार निर्माण शिविर प्रारम्भ हुआ। शिविरार्थियों में स्नातक, स्नातकोत्तर, साहित्यकार, वकील, शिक्षक, गायक, वक्ता आदि प्रबुद्ध व्यक्ति भी अच्छी संख्या में थे। शिविर में बीकानेर तथा चूरू जिले के लगभग नब्बे हरिजन कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में भारतीय संस्कार निर्माण समिति के मंत्री और शिविर के संयोजक मोहनलाल जैन ने कहा- ''आज मनुष्य-मनुष्य के बीच वर्गभेद की जो दीवार खड़ी

हो गयी है, उसे तोड़ने का उपक्रम है यह शिविर। इससे हमको एक नयी दिशा मिलेगी, ऐसा विश्वास है।''

शिविर पद्धति है सर्वोत्तम

संस्कार निर्माण शिविर के शिविरार्थी बंधुओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा, ''संस्कार निर्माण के लिए शिविर पद्धति ही सर्वोत्तम है। शिविर के माध्यम से विचारों को सुगमता पूर्वक आचरण में लाया जा सकता है। हमें प्रतिक्रिया की चिंता किये बिना चिन्तनपूर्वक और विवेकपूर्वक अपना काम करते रहना है।''

दलित वर्ग के प्रति समाज की उपेक्षा को उजागर करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा– ''हरिजन भाई आपसे रुपया नहीं माँगते, मकान नहीं माँगते, रोटी नहीं माँगते। वे तो आपसे केवल प्रेम माँगते हैं, विश्वास माँगते हैं। आपकी तरह वे भी अच्छे मनुष्य की तरह जीना चाहते हैं। फिर आप उनका अनादर क्यों करते हैं? उन्हें अस्पृश्य, अछूत आदि क्यों कहते हैं? हरिजनों में अनेक कमजोरियां हो सकती हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि कमजोरियां किसमें नहीं होतीं? हरिजनों की कमजोरियों के लिए दूसरा कोई जिम्मेदार नहीं है। वे लोग ही

जिम्मेदार हैं, जिन्होंने उनकी उपेक्षा की। उन्हें अस्पृश्य और अछूत कहकर समाज से अलग कर दिया या ठुकरा दिया। मैं आज इसी आशा और विश्वास के साथ इस शिविर का उद्घाटन कर रहा हूँ कि शिविरार्थी बंधुओं में अच्छे संस्कारों का निर्माण होगा।'' शिविर सात दिनों का था, पर पाँच दिनों में ही सात दिन का काम हो गया। शिविरार्थियों ने बहुत अच्छे संस्कारों का अर्जन किया। उनका दिल पूरा-पूरा भर गया। एक प्रकार से उन्हें नया जीवन मिल गया।

संकल्प चतुष्टयी

26 मई को शिविर की संपन्नता से पहले एक हरिजन सम्मेलन हुआ। उसमें उल्लेखनीय उपस्थिति रही। समापन कार्यक्रम में विद्वान शिविरार्थी बंधुओं ने विचित्र भाव व्यक्त किये। विषमतापूर्ण व्यवहार करने वालों के प्रति उनका रोष भी व्यक्त हुआ। इस स्थिति के बावजूद शिविर के प्रशिक्षण से उन्हें बहुत संतोष हुआ। लगभग सभी शिविरार्थी जीवनदानी कार्यकर्ता के रूप में काम करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने इस काम के प्रति अत्यधिक निष्ठा व्यक्त की। शिविरार्थियों के लिए चार नियम निर्धारित किये गये -

- ☐ मद्यपान का परित्याग करना
- ☐ प्रतिदिन मंगलधुन लगाना
- ☐ संवत्सरी को उपवास करना
- ☐ समय-समय पर सत्संग करना

जो व्यक्ति उक्त नियमों को स्वीकार करेंगे, वे संस्कारी कहलाएंगे। ऐसे हजारों व्यक्तियों को तैयार करना है। संस्कार निर्माण शिविर की सफल आयोजना के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि दलित वर्ग के उद्धार का एक नया रास्ता खुल गया है।

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न को क्लिक करें

15 राज्य **200** शहर **1** लाख बच्चे

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

मुख्य विषय : **असली आजादी अपनाओ**

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण | कविता

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता करवाने की अंतिम तिथि 30 अगस्त 2023

सम्पर्क करें :

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

9110613732, 91166 34512, 91166 34514,
9841622082, 93007 28836, 98640 32611,
94141 59617, 99265 12363, 98924 67317.

धर्म उत्कृष्ट मंगल है : आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता का मुंबई में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने चतुर्मास के लिए अपनी धवल सेना के साथ 28 जून को सुबह नंदनवन परिसर में पावन प्रवेश किया।

उपस्थित जनमेदिनी को अमृत रस का पान करवाते हुए आचार्य श्री ने फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। आदमी विघ्न-बाधाओं से बचने की इच्छा करता है और बचने का प्रयास भी करता है। शुभ मुहूर्त में प्रवेश करते हैं, इसमें भी मंगल की कामना अन्तर्निहित हो सकती है। अनेक कार्यों में मंगल की कामना होती है। कुछ पदार्थ भी मंगल के रूप में आसेवित किये जाते हैं। शास्त्रकार ने मंगल के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण बात बतायी है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। मेरा भी मंतव्य है कि धर्म से बढ़कर दूसरा कोई मंगल नहीं है। अहिंसा, संयम और तप में धर्म है। सम्पूर्ण

आत्मशुद्धिकारक धर्म इसमें आ गया। अहिंसा आदमी के जीवन में है, धर्म का एक आयाम उसके जीवन में आ गया। संयम और तप है तो धर्म का दूसरा-तीसरा आयाम भी जीवन में आ गया। साधु-साध्वियां जो महाव्रती हैं, वे अपने आपमें मंगल हैं। मंगल पाठ सुनना भी महत्वपूर्ण मंगल है। अरहंत, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल है।

अभिनंदन हेतु श्रीचरणों में पहुँचे मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी आचार्य श्री महाश्रमण की सन्निधि में पहुँचे। मुख्यमंत्री ने कहा, मैं महाराष्ट्र की धरती पर आचार्य महाश्रमणजी का हृदय से स्वागत अभिनंदन करता हूँ। महाराष्ट्र संतों की भूमि, पावन भूमि है। आपके आने से और समृद्ध भी हो जाएगी। आप एक मिशन पर कार्य कर रहे हैं। आपने 55000

किमी की यात्रा की है। हम आपका आशीर्वाद लेने आये हैं। हमने भी ड्रग-फ्री मुंबई पर कार्य शुरू किया है। पूज्य प्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में समझाते हुए आशीर्वचन फरमाया। व्यवस्था समिति की ओर से मुख्यमंत्री शिंदे का सम्मान किया गया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के बैनर का विमोचन

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा नंदनवन में 19 जुलाई को अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 के बैनर का विमोचन किया गया। चार चरणों – स्कूल स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का मुख्य उद्देश्य नयी पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करना है।

मुंबई में किडजोन का शुभारंभ

मुंबई। आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास प्रवास स्थन नंदनवन में 19 जुलाई को अणुव्रत विश्व भारती के अणुव्रत बालोदय किडजोन का आचार्यश्री के मंगल पाठ से शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने किडजोन परिसर का अवलोकन करने के बाद कहा कि यहां आकर बच्चे जरूर कुछ सीखेंगे। किडजोन बच्चों के सर्वांगीण विकास में काफी उपयोगी साबित होगा।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि इस बार किडजोन में बच्चों के आकर्षण और उनके ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए कई नये आयाम जोड़े गये हैं। इससे

पहले प्रायोजक राकेश कठोतिया परिवार ने किडजोन का उद्घाटन किया।

बच्चे समस्या नहीं, समाधान देने वाले बनें : आचार्य महाश्रमण

जीवन-विज्ञान संगोष्ठी में जुटे विद्यालय संचालक

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा है कि शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने एवं उनके अज्ञान को दूर कर उन्हें ज्ञानवान एवं चरित्रवान बनाने का महत्वपूर्ण कार्य होता है। उनको लौकिक विद्या के साथ-साथ अध्यात्म की शिक्षा भी मिले तो संतुलन बना रह सकता है। यदि जीवन-विज्ञान और अध्यात्म की शिक्षा के माध्यम से संस्कारों की शिक्षा प्राप्त हो तो बच्चा समस्या पैदा करने वाला नहीं, अपितु समाधान देने वाला बन सकता है। आचार्य श्री अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 19 जुलाई को आयोजित जीवन-विज्ञान चिन्तन संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ साहित्य में उल्लेखित जीवन-विज्ञान संबंधी विभिन्न संस्मरणों के संकलन को पढ़कर सुनाया। मुख्य मुनिप्रवर मुनिश्री महावीरकुमारजी ने कहा कि भविष्य में भारत के सभी स्कूलों के पुस्तकालय में जीवन-विज्ञान की पुस्तकें उपलब्ध हो सकें, ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि जीवन-विज्ञान से आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्ति का निर्माण संभव है।

द्वितीय सत्र में मुनिश्री योगेशकुमारजी एवं जीवन-विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमारजी ने कहा कि देशभर के अनेक स्कूलों में जीवन-विज्ञान का कार्य चल रहा है और बहुत स्थानों पर इस दिशा में कार्य हो रहा है। इसे एकरूपता से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अब जीवन-विज्ञान के प्रकल्प का कार्य देशभर में कार्यरत अणुव्रत समितियों के मजबूत संगठन के माध्यम से प्रारम्भ किया गया है। विगत लगभग दो वर्षों से इस दिशा में काफी प्रगति हुई है।

मेगनस ग्लोबल स्कूल, वर्द्धमान (पश्चिम बंगाल) के संचालक राजेश सुराणा, जतनदेवी डागा हायर सैकेण्डरी स्कूल, रायपुर के संचालक मनीष डागा, अमित बोलिया विद्या निकेतन, गंगापुर के चेयरमैन प्रकाशचन्द बोलिया, संस्कार इंटरनेशनल स्कूल के प्रबन्धक मुकेश मेहता, प्री-स्टार पब्लिक स्कूल, छोटी खाटू के प्राचार्य मोहित शर्मा तथा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, भीलवाड़ा के निदेशक मदनलाल टोडरवाल ने अनुबंध पर हस्ताक्षर कर जीवन-विज्ञान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। संगोष्ठी में 9 राज्यों के 65 प्रतिभागियों के साथ मुम्बई क्षेत्र के कार्यकर्तागण शामिल हुए।

आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?

इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...

'बालोदय एजुटूर'

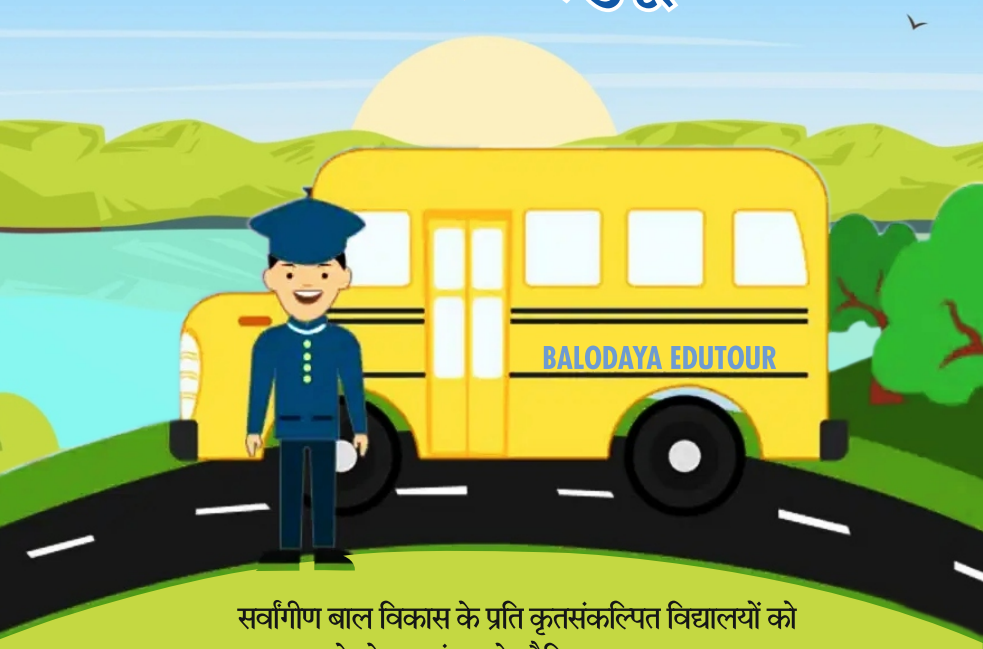

सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका

बालोदय एजुटूर की विशेषताएं

- राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच **'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस'** में बेस कैम्प
- योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
- पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
- बस सुविधा उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमंद कार्यालय-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org

'बालोदय एजुटूर' की एक झलक देखने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

https://anuvibha.org

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 68 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी	–	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :